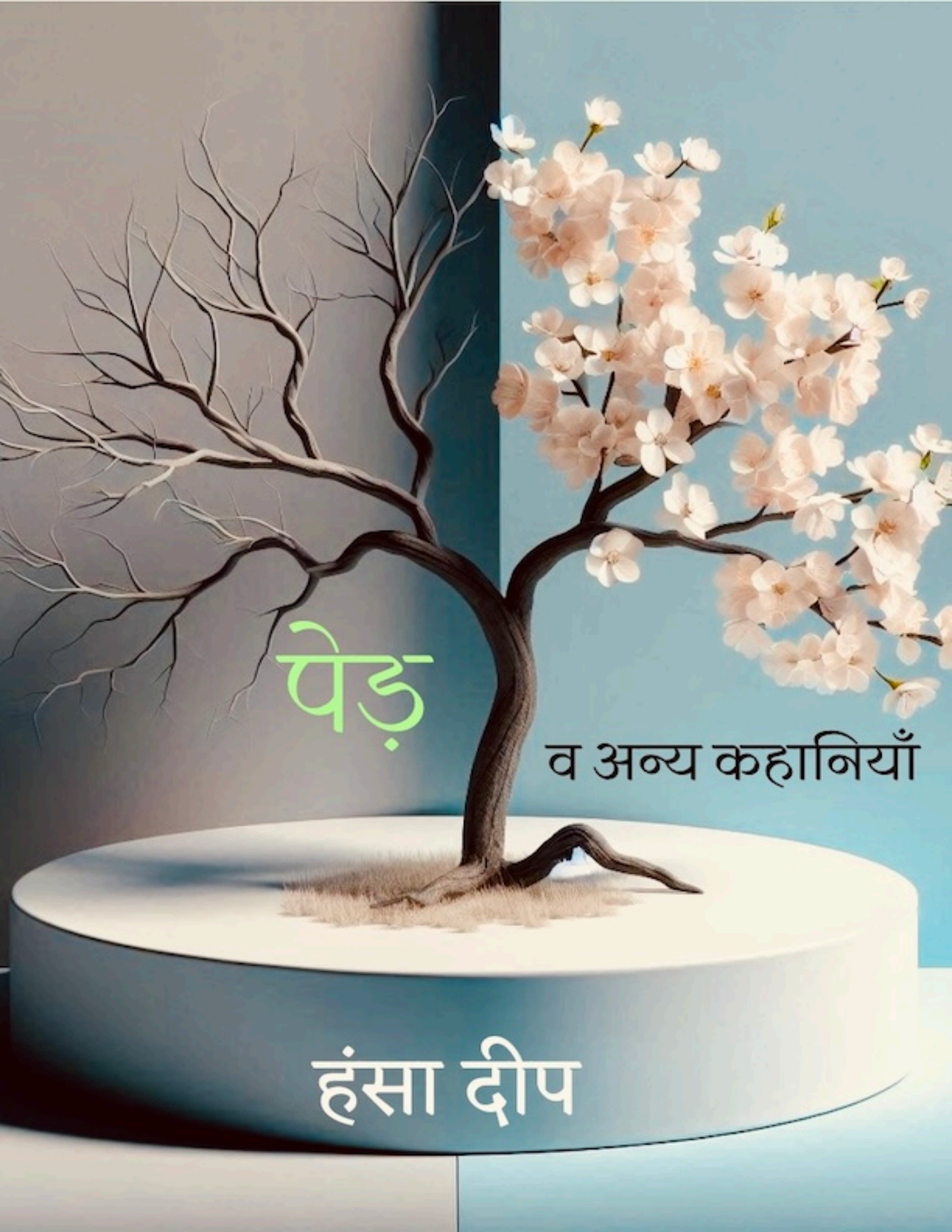
पेड़
व अन्य कहानियाँ
हंसा दीप

पेड़ व अन्य कहानियाँ

हंसा दीप

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फरवरी, 2026

© हंसा दीप

अनुक्रम

शून्य के भीतर	3
काठ की हांडी	17
कॉफी में क्रीम	27
एक बटे तीन	40
अम्मी और मम्मी	54
पेड़	70
टूटी पेंसिल	80
चेहरों पर टँगी तख्तियाँ	96

शून्य के भीतर

शहर के पास एक पशु-पक्षी विहार था जिसकी बहुत तारीफ सुना करते थे। भारत से एक मित्र का आगमन हुआ तो सोचा उन्हें घुमाने ले जाने की शुरुआत यहीं से की जाए। सुबह का नाश्ता करके जब हम वहाँ पहुँचे तो गेट पर एक बड़े-से बोर्ड पर यह नियम लिखा हुआ नज़र आया कि "पशु-पक्षियों को कुछ भी न खिलाया जाए। प्रवेश के लिये कोई टिकट नहीं है। अगर आप स्वयं दान के इच्छुक हैं तो करिए मगर इस पशु-पक्षी विहार की कहानी पढ़िए या सुन लीजिए।"

हम गेट से अंदर दाखिल होकर आगे बढ़ने लगे। बीच में बने लंबे गोलाकार रास्तों से गुजरते हुए कई जीवों की एक अलग दुनिया दिखी। दायीं ओर तारों के अंदर की तरफ़ विचरते कई अलग-अलग तरह के पशु दिखाई दिए। अपने-अपने समूहों में अपनी-अपनी सीमाओं में। रास्ते के बायीं ओर कई पेड़ों पर बैठे अनगिनत परिंदे थे जो अपने लिये बनाए गए उस जंगल में प्राकृतिक जीवन जी रहे थे। इन पंछियों की चहचहाहट के साथ ही तमाम अलग-अलग तरह की आवाजों से माहौल प्रतिध्वनित हो रहा था।

पशु-पक्षियों की मस्ती देखकर लग रहा था कि उनकी यहाँ पर बहुत देखभाल की जाती है। हर तरह के पशुगृह थे। बिल्लियों के लिये अलग घर था, कुत्तों के लिये

अलग और रैकून के लिये अलग। इस अनुपम प्राकृतिक स्थल पर अलग-अलग प्रजाति के इतने जानवरों को एक साथ देखना एक अलग ही तरह का अनुभव था।

थके-हारे एक जगह बैठे और अपने साथ लाए नाश्ते के सामान को खत्म किया। हालाँकि यहाँ विचरना बहुत ही खुशनुमा अनुभव था लेकिन घूमते-घामते अब थकने लगे थे। यह पहले ही निश्चित कर लिया था कि वह कहानी पढ़ने के बाद ही वहाँ से निकलना है। कुछ लोग ऑडियो सुनने में व्यस्त थे तो कुछ लोग बैठकर पढ़ते हुए बातें भी कर रहे थे। मेरे मित्र ने ऑडियो सुनना शुरू किया और मैं पढ़ने लगी।

कुमुडी कहते थे सब उसे। सुनने में तो कुमुडी बड़ा अजीब सा लगता है पर नाम किस तरह बिगड़ कर नया रूप ले लेते हैं इसका यह अच्छा उदाहरण था। यह कुमुडी श्रीलंका में पैदा हुई, बचपन में ही माता-पिता के साथ न्यूज़ीलैंड में बस गयी थी और नौकरी मिलने पर आ पहुँची थी कैनेडा के टोरंटो शहर में।

कहाँ से निकला बीज, कहाँ जाकर उगा और फिर कहाँ जाकर इसका विस्तार हुआ!

देशों की विविधता के अनुरूप ही उसके नाम ने भी विविध रूप लिए। कौमुदी से कोमुडी, कुमुड़ी और फिर कुमुडी। उसकी जड़ें श्रीलंका से जुड़ी थीं अत: यह जानना आसान था कि उसके घर में तमिल बोली जाती होगी। यह नाम तमिल, संस्कृत या